ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

ढोला मारू रा दोहा का कथानक – वैशिष्टकय

Story of Dhola Maru Ra Doha - Characteristics

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

सीताराम मीना
सह आचार्य,
हिन्दी विभाग,
स्व राजेश पायलट राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बॉदीकुई, राजस्थान, भारत

सारांश

यह ''ढोला मारू रा दोहा'' राजस्थानी साहित्य का एक श्रेष्ठ रत्न है। इसकी मनोमुग्धकारिणी कहानी का संबंध आमेर के आख्यानों तथा वीर कछवाहा राजवंश से लोक में प्रकट हुआ है। इसका प्रचार यहां तक है कि बाजार में पोंथी बेचने वालों के पास भी ढोला मारू की बात अथवा मारू का ख्याल नाम की छोटी–छोटी पुस्तकें हम देख पाते हैं। यह मोहिनी कथा कितने ही लालों को पलने में दुलारने और उनके कमल नयनों में सर्वइंद्रिय–दुख–हरिणी सुख–निंदिया को बुलाने में जादू का सा कार्य करती रही है।

डॉ हरिकांत श्रीवास्तव के शब्दों में, ''ढोला मारू रा दोहा'' एक ऐसा ही काव्य है जिसमें नायिका के पिता ने बचपन में साल्ह कुमार से उसका विवाह कर दिया था। यौंवन आने पर नायिका ने अपने पति के वियोग का अनुभव किया और अपने प्रयास द्वारा उस तक अपना संदेश भी पहुंचाया । 'ढोला मारु' में विप्रलभ श्रृंगार प्रधान, है ठीक उसी प्रकार बीसलदेव रासो में भी उसकी प्राधानता मिलती है अंतर केवल इतना है कि एक में बाल्यकाल में विवाह हो जाने के उपरांत ही पति–पत्नी बिछुड़ जाते हैं और दूसरे में यौवनावस्था में कुछ दिन साथ रहकर दुर्भाग्यवश एक छोटी सी बात पर विलग हो जाते हैं अन्यथा दोनों की कथा में विशेष अंतर नहीं।'' [1]

इस कहानी में ढोला मारवणी का प्रेम–वृतान्तं आधिकारिक कथा है। यह काव्य पात्र प्रधान है घटना प्रधान नहीं। ढोला नायक मारवणी इसकी नायिका तथा मालवणी उप नायिका है। कथा का कार्यरूप परिणाम है ढोला द्वारा मारवणी का विरह दुःख से उद्धार कर उसको अपने घर लाना। इस परिणाम अथवा लक्ष्य की ओर सभी प्रासंगिक वृतान्तों का सहायक रूप में प्रवाह हुआ है । प्रासंगिक कथाएं मुख्यतः ये हैं :–

1. घोड़ों के सौदागर का पूंगल में आकर समाचार देना।
2. मालवणी की प्रार्थना पर ऊंट का लंगड़ा होना।
3. मालवणी द्वारा प्रेरित सूए का ढोला को लौटा लाने के लिए जाना।
4. ऊमर सूमरा के दुष्ट चारण का षड्यंत्र–झूठी सूचना देना ।
5. ऊमर सूमरा का ढोला को धोखा देकर मारवणी के हरण का दुष्ट प्रयत्न।
6. योगी–योगिनी का आना और सहायता देना

इन कथानक बिंदुओं का विशेष आधार क्या है यही देखना हमें अभीष्ट है

This "Dhola Maru Ra Doha" is an excellent gem of Rajasthani literature. The relation of its captivating story is revealed in the folklore of the Amer and the Veer Kachwaha dynasty. Its propaganda is even that even those who sell ponthi in the market can see small books called Dhola Maru Ki Baat or Maru Ka Khyal. This Mohini tale has been a magic work in reverberating the Lalas and invoking Sarvandriya-Dukh-Harini Sukh-Nindiya in their lotus choices.

In the words of Dr. Harikant Srivastava, "Dhola Maru Ra Doha" is one such poem in which the heroine's father married Salah Kumar in her childhood. Upon coming to puberty, the heroine experienced the disconnection of her husband and through her efforts also conveyed her message to him. In 'Dhola Maru', Vipralabh Shringar Pradhan is the same, in the same way his prominence is found in Beasladeva Raso, the only difference is that in one, the husband and wife get separated after getting married in childhood and in the second few days of puberty. Unfortunately, they get separated on a small matter otherwise there is no special difference between the two.

The love story of Dhola Marwani is the official story in this story. This poetic character is predominant and not eventful. Dhola Nayak Marwani is its heroine and Malvani is the deputy heroine. The working result of the story is that Dhola rescues Marvani from sorrow and brings her home. All relevant accounts have flowed in a supportive way towards this result or goal. Relevant stories are mainly Rs-

1. To give news of horse dealers in Pongal.
2. Camel's limping at the prayer of Malavani.
3. To bring back the dhow to Dhola inspired by Malavani.
4 Conspiracy to give false information to Omar Sumra.
5. Umar Sumra's wicked attempt to deceive Marvani by deceiving Dhola.
6 Yogi-Yogini to come and help

What we want to see is the special basis of these plot points

मुख्य शब्द : पूंगल, नरवर, मारवणी, मालवणी, प्रेम, विरह, ऊमर सूमरा, दाम्पत्य ।

Pungal, Narwar, Marwani, Malvani, Prem, Virah, Omar Sumra, Married life.

प्रस्तावना

ढोला मारू प्रेम कथात्मक प्रेमाख्यान है। इसकी कथा ऐतिहासिक–काल्पनिक मानी गई है। इसका रचनाकाल सं 1450 के लगभग माना गया है। ढोला मारू प्रेमाख्यान का प्रचार प्रसार समस्तर राजस्थान, छत्तीसगढ और ब्रज प्रदेश आदि क्षेत्रों में बहुतायत से होता है। इन क्षेत्रों में ढोला मारू प्रेमाख्याान बहुत ही लोकप्रिय है। विभिन्न अवसरों पर यहां के निवासी बडे चाव से इस लोक गाथा का आनन्द उठाते है।

इसको प्रस्तुत करने की एक विशेष शैली है। भोपा– भोपी गायकों की एक जाति के दो व्यक्ति वाध्ययंत्र, सारंगी पर मनमोहन तरीके से प्रस्तुति करते है। आज ढोला मारू प्रेमाख्यान लिपिबद्ध रूप में मिलता है लेकिन प्रारम्भ में इसका स्वरूप मौखिक ही रहा होगा। पर बाद में याद करने की सुविधा तथा संरक्षक के लिए लोकप्रिय बातों को लिपिबद्ध करने की परम्परा चल पडी।

राजस्थान की लोकगाथाओं में बहुत सी प्रेम कथाएँ प्रचलित है पर इन सब में ढोला मारू प्रेमगाथा विशेष लोकप्रिय रही है। इस गाथा की लोकप्रियता का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आठवीं सदी के आस पास की इस घटना का नायक ढोला राजस्थान में आज भी एक प्रेमी नायक के रूप में स्मरण किया जाता है और प्रत्येक पति–पत्नी की सुन्दर जोडी को ढोला मारू की उपमा दी जाती है। यही नहीं आज भी लोक गीतों में स्त्रियॉ अपने प्रियतम को ढोला के नाम से ही संबोधित करती है। ढोला शब्द पति शब्द का पर्यायवाची ही बन चुका है। राजस्थान की ग्रामीण स्त्रियां आज भी विभिन्न् मौकों पर ढोला मारू के गीत बडे चाव से गाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

''ढोला मारू'' राजस्थान के श्रेष्ठ प्रेमाख्यानों मे से एक है इस प्रेमाख्यान की विवेचना करने का उद्देश्य राजस्थानी परम्परा, प्रेम,आन–बान–शान को बताना है, प्रेम का स्वच्छ रूप, मर्यादा, कथनी– करनी का ऐक्य, प्रेमी हृदय की विशालता, एक निष्ठ प्रेम, प्रेमी जोडो की विरह विवशता भारतीय दाम्पत्य प्रेम की अनुठी झलक और राजस्थानी परिदृश्य को दिखाना प्रमुख उद्देश्य रहा है। इस प्रेमाख्यान काव्य में मालवणी का दाम्पत्य प्रेम व मारवणी का प्रेमिका प्रेम का जो ताना बाना बुना गया है वह पाठकों को बरबस सोचने पर मजबुर कर रहा है। अन्त में भारतीय सन्दर्भ में सौतिहा– डाह की कल्पना निश्चित रूप से वास्तविकता का अहसास करवाती हैा ढोला मारू का प्रेमाख्यान निश्चित रूप से राजस्थानी साहित्य में एक अनुठी मिशाल प्रस्तुत करता है।

पूंगल में अकाल का पड़ना

कथानक की प्रथम घटना में विचित्रता है पूंगल में अकाल पडना और पूंगल के राजा का नरवर के राजा नल के यहां आश्रय ग्रहण करना। समाज में राजा, सामंत, ब्राह्मण, धनी, सेठ, पुरोहित और धर्मगुरुओं का उतना ही महत्व था जितना प्राचीन भारत में था। मुसीबत में एक राजा मानवीय धर्म निभाते हुए दूसरे राजा को आश्रय के साथ–साथ पूर्ण सम्मान भी देता था। अतिथि भी तन–मन–धन से संपन्न होता था। यह बिंदु महत्वपूर्ण है। इन्हीं संस्कारों के कारण यह मोड स्वभाविकता लिए हुए हैं। क्योंकि यह धारणा और विश्वास तत्कालीन सभ्यता के अंग थे। उस काल की सामाजिक प्रवृतियां और जीवन दृष्टि यहां स्पष्ट है।

भूख से व्याकुल मनुष्य क्या नहीं करता । मनुष्य का ज्ञान, ध्यान, शील और व्यवहार उसी समय तक नियमित और शिष्ट रह सकता है जब तक कि उसकी सभी समस्याओं का समाधान सहज रूप में होता रहता है। कठिनाइयां उत्पन्न होने के साथ ही मनुष्य की मनुष्यता खो जाती है। राजस्थान में वृक्ष बहुधा कांटेदार ही होते है और उनमें से अधिकांश छोटे कद के होने के कारण पथिक को दिन की धूप में पर्याप्त सुख नहीं प्रदान कर पाते होंगे । यहां के लोग तो अकाल से पूर्व भी कांटेदार घास से निकले गोखरू में से जो धान निकलता है उसे ही रुचि से खाते और भेड़ बकरी का दूध ही पीते हैं । ऐसे कष्टमय देश में कठोरता से जीवन निर्वाह करने वाली जाति स्वभाव से ही साहसी, सहिष्णु, वीर और दृढ़ होती है। परिस्थितियों की भीषणता उन्हे झकझोंरती नहीं है । इन परिस्थितियों और गूढ़ परिचय के बाद बड़े ही स्वाभाविक ढंग से कवि ने विवाह की योजना मनोवैज्ञानिक ढंग से उभारने का परिचय दिया है।

उस युग की विवाह प्रथा पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है जबकि बहुत ही छोटी आयु में विवाह की प्रथा थी । सुना जाता है कि गर्भ में ही संबंध स्थापित कर लिए जाते थे 'तेरा लड़का और मेरी लड़की या इसके विपरीत'। मारवाणी 1 1/2 वर्ष की थी और ढोला 3 वर्ष का, और उस युग की प्रथा के अनुसार बाद में गोणा देने का सहारा दे सुदिन आने पर वे अपने देश लौट आते हैं। नन्हीं बालिका मारवणी भी साथ लौट आती है जिसका जटिल जीवन से कोई परिचय नहीं था।

मारवणी का स्वप्न

यौवना होते ही नियति अपना चक्र चलाती है। यह भूमिका रूपी घटना अपनी समस्त अस्वभाविकताओं के होते हुए भी आगे की समस्त कथा को स्वभाविक बना देती है, क्योंकि जब कोई घटना नियत है तब तो कुछ भी हो रहा है, सब स्वभाविक है । मारवणी यौवना होती है और स्वप्न में देखें किसी अज्ञात पुरुष के प्रति आकर्षित होती है। भारतीय साहित्य में नायक–नायिका के पूर्वानुराग को बहुत महत्व दिया गया है, अतः प्रत्यक्ष मिलने से पूर्व ही प्रेमियों में अनुराग का भी सहारा लिया है । किन्तु स्वप्न–दर्शन–जन्य प्रेम को तो वास्तविकता के अनुभूत सत्यों के आधार पर पूर्ण यथार्थ भी नहीं कहा जा सकता। स्वप्न–दर्शन–जन्य प्रेम की यथार्थता के संबंध में एक दूसरी बाधा स्वप्न में देखे गए नायक–नायिका की वास्तविक विद्यमानता को लेकर भी तो है। कहा जा सकता है कि स्वप्न में देखी गई जिन–जिन आकृतियों के लिए प्रेम और मिलन की उत्कट विक्षिप्तदता और उतावले विरह का वर्णन किया गया है वे आकृतियां वास्तविक जगत के प्राणी है या नहीं, इसका बोध नायक–नायिका को कैसे होता है, यदि नहीं होता तो इस बोध के पूर्व ही प्रेमोन्माद कि स्थिति कैसे संभव हो सकती है ?

यहां हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि ''स्वप्न भविष्य की सूचना देते हैं यह विश्वास किसी न किसी रूप में संसार भर की जातियों में पाया जाता है अपने इतिहास और पुराण के आदिम काल से मनुष्य स्वप्न देखता और उसके बारे में कहता आ रहा है । उसी काल में स्वप्नों का अभिप्राय बताने वाले भी विद्यमान रहे हैं। स्वप्न सदा मनुष्य की गहरी अभिरुचि का विषय रहे हैं। समस्त मानव जाति के आदि साहित्य में इसकी चर्चा मिलती है।''[2]

यहां महत्वपूर्ण यह है कि कवि ने स्वाभाविक ढंग से यौवना होने पर मन में यह भाव उत्पन्न कर दिया है कि यह विवाहिता है, मन में संस्कारों के परिणामस्वरूप यह स्वप्न वास्तविकता का आधार लिए हुए आता है इसे हम रूढिगत पालन हेतु नहीं मानते। सखियों के बताए जाने पर वह उसी की स्मृति या कामना में खो जाती है, यहां भारतीयता का पूर्ण प्रभाव है। यौवना होने पर पुरुष का ध्यान आना स्वभाविक ही होता है। लेखक ने स्वप्न–दर्शन के मनोवैज्ञानिक आधार का सहारा ले उसके मर्यादित रूप की रक्षा की है, स्वप्न में भी पराये पुरुष का ध्यान नहीं आया यह अपने आप में पूर्णता और नवीनता लिए हुए एक अपूर्व घटना है। इस कारण हम यह कह सकते हैं कि यह स्वप्न–दर्शन मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्वभाविक और यथार्थ है साथ ही कवि इस नवीनता के लिए बधाई का पात्र है।

मारवणी द्वारा संदेश भेजना

परिचय प्राप्त होते ही वह अपने प्रेमी पति का साक्षात्कार करना चाहती है और इसके लिए संदेशवाहक आवश्यक है हर आने जाने वाले से वह उस देश और अपने पति का परिचय पाना चाहती है। विरहाग्नि में तप कर कंचन सा चमक उठने वाला प्रेम प्रत्यक्ष हो उठता है। कवि ने विरह वर्णन द्वारा मारू के प्रेम को समय की चरम सीमा पर पहुंचा दिया है, ऐसी स्थिति में सौदागर द्वारा ढोला के दूसरे विवाह की सूचना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यहां मालवणी से विवाह हो जाने तथा मारवणी के संदेश पर कड़ा पहरा लगवाकर कवि ने बड़ी चतुराई से यहां कथानक में एक विशेष प्रवाह एवं लालित्य पैदा कर दिया है। इससे लगने लगता है कि शायद मालवणी के षड्यंत्र के कारण निर्दोष मारवणी कभी अपने प्रियतम से मिल न पाएगी।

परंतु यहां बात दूसरी है मारवणी के हृदय की सच्ची लगन प्रिय मिलन की आशा है। वह प्रिय से मिले बिना मरने को उद्धत नहीं है। इस संदेश की यह अपनी नवीनता है क्योंकि प्रेम में आशा का निरंतर प्रकाश रहता है प्रेमी का प्रेम–पात्र के प्रति अखंड विश्वास होता है यद्यपि विरह की तीव्र वेदना अंधकार के रूप में इस आशाजन्य–प्रकाश की क्रिया प्रतिक्रिया का बड़ा अच्छा निदर्शन मारवणी के संदेश में उपलब्ध होता है।

कवि अपने उद्देश्यों और मान्यताओं के प्रति सजग है उसका ढ़ाढियों द्वारा संदेश भिजवाना कथानक संगठनगत वह अनोखी दक्षता है जो इस प्रेमाख्यान को विश्व साहित्य की अनुपम निधि बना देती है। कथा आगे बढ़ती है ढ़ाढियों द्वारा संदेश पाकर समस्त विगत घटना का स्मरण कर दुःखी होता है। ढ़ाढियों द्वारा संदेश सुनकर ढोला के मन में आनंदोत्साह हुआ जैसे किसी को अपनी खोई अथवा भुलाई हुई बहुमूल्य निधि को पाकर आनंद होता है। ज्यों–ज्यों मारवणी की सोंचनीय दशा का स्मरण करता है त्यों–त्यों प्रेयसी से मिलने की उत्कंठा और उसकी दुखी दशा से उन्मुक्त करने की चिंता और चेष्टा का उत्साह उसके भावों को त्वरित करने लगा।

ढ़ाढियों द्वारा संदेश पहुंचाने की अपनी विशिष्टता है कि उनकी करुण–पुकार सुनकर राजा प्रेमोन्माद और विरहाकुलता की उस मनः स्थिति में पहुंच जाता है जिसमें नायिका को पाने का प्रयत्न आवश्यक हो जाता है। जो कार्य प्रेमाख्यानों में शुक या हंस करता है वही कार्य कथा–सरित्सातगर की अनेक कथाओं में भिक्षुणी या सन्यासिनी करती है। स्पष्ट रूप से कवि ने यहां लोक तत्व का सहारा लेकर ढ़ाढियों को ही सबसे अधिक उपर्युक्त समझा है।

ढोला का पूंगल के लिए प्रस्थान

यह घटना मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के कारण भी महत्वपूर्ण है। ढोला के सामने प्रेम मार्ग में सबसे कठिन समस्या उपस्थित हो गई थी, उसके प्रेम की समान रूप अधिकारणियों मालवणी व मारवणी दोनों थी। वह किस संयोगिता को छोड़कर वियोग–दुःखी करें और किस विमुक्ता को ग्रहण कर संयोगिता रूप प्रदान करें, संयोग सुख से सुखी करें। दोनों ओर से प्रेम और कर्तव्य बुद्धि की खींचतान उपस्थित हो गई। मालवणी के प्रेम का तिरस्कार भी आसानी से नहीं कर सकता था, वह उसकी विवाहिता है। इस प्रकार की अमर्यादा से कवि उसे बचाना चाहता है। इसी कारण मालवणी को जिस किसी तरह भी प्रसन्न करके उसकी आज्ञा लेकर ही वह चलता है । यह घटना कथानक को कवि की सजग महत्वपूर्ण मौलिक देन है, जिसे हम ढोला के मन की उदात्त भावना कहेंगे, जिसमें मर्यादा पालन, धर्म रक्षा और समाज के विशिष्ट संस्कारजन्य वैवाहिक प्रतिज्ञा का पालन मिश्रित है।

''ढोला मारू रा दूहा'' एक लोकगीत है। लोक तत्व का विशेष महत्वपूर्ण प्रदर्शन इसके हर मोड़ पर सिद्ध करता है कि यह वास्तव में लोककथा पर आश्रित लोकगीत है।

''आदिम युग की बर्बरावस्था में मानव सर्वचेतनवादी था, अर्थात वह सृष्टि की सभी वस्तुओं को मानवीकृत रूप में देखना और उनमें ही समान–चेतना इच्छा शक्ति और क्रिया शक्ति का आरोप करता था। इस कारण वह भौतिक वस्तुओं में आधिवैदिक शक्ति की प्रतिष्ठा करके उनके साथ मानवीय व्यवहार करता है।''[3] सर्वचेतनवादियो ने आदि–मानवों अन्य प्राकृतिक वस्तुओं में अति प्राकृतिक शक्तियों वाले देवी देवताओं, राक्षसों आदि की कल्पना की। सर्वचेतनवाद का दूसरा रूप टोटकों के रूप में दिखाई पड़ता है । आदमी बर्बर जातियां किसी विशेष पशु–पक्षी या वृक्ष को अपने आदिम पुरुष के रूप में मानती थी और आज भी वनवासी जातियों में भी यह मान्यता वर्तमान है। आदिम मानव अपने तथा अन्य प्राकृतिक वस्तुओं, विशेषकर चेतन प्रकृति पशु–पक्षी आदि में कोई अंतर नहीं देखता था। ऑस्ट्रेलिया और उत्तरी अमेरिका कि कुछ जनजातियों में यह मान्यता है कि प्रारंभ में मानव और पशु–पक्षी में कोई अंतर नहीं था, एक ही थे। बाद में देवी शक्तियों ने

असंतुष्ट होकर तीनों की अलग–अलग जातियां बना दी। लेविस स्पेन्स का मत है कि टोटकों का विकास इसी प्रकार के विश्वासों से हुआ होगा।''[4]

आगे चलकर एक और बड़े मनोवैज्ञानिक परिवर्तन को चित्रित किया गया है मालवणी पहले तो ढोला को लौटा लाने के लिए सूए को भेजती है किंतु जब सुआ असफल लौट आता है तो ढोला के प्रति उसका अनुराग एकाएक उमड़ पड़ता है। तब वह ढोला के पूंगल पहुंचने में बाधिका न होकर सहायिका का रूप धारण कर लेती है और इसी आशय से ईश्वर से काले बादल हो जाने की प्रार्थना करती है ताकि मरू देश में चलते ढोला को सुखद शीतल छाया का सुख दे सके।

पूंगल देश के मार्ग में बाधाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

प्रेमिका की तरफ बढ़ते हुए प्रेमी के पक्ष में बाधाओं का वर्णन प्रायः प्रेमाख्यानों में विशेष महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में आता है। परंतु ढोला के पथ में विशेष बाधाएं नहीं उठाई गई है जो उठाई भी गई है उनका आधार केवल मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। ऊमर सूमरा के चारण द्वारा उसे मारवणी की गलित यौवनावस्था का हाल मालूम होता है तब ढोला के मन में संशयजन्य विरक्ति की भावना उत्पन्न होती है जो स्वभाविक है क्योंकि प्रेम में प्रेमी व्यक्तियों के साक्षात्कार की आवश्यकता होती है जिसका यहां पूर्ण अभाव है, देखने की स्मृति भी नहीं है। परंतु यह सूचित किए जाने पर की यदि तुम बूढ़े हो गए हो तो वह भी हो गई होगी, परंतु जब तुम अभी युवक हो तो वह तुमसे छोटी होते हुए भला कैसे गलित यौवनावस्था को प्राप्त कर सकती है। यहां मनोवैज्ञानिक आधार पुष्ट है।

परस्पर दो प्रेमी हृदयों में स्थान की दूरी के बावजूद एक अदृश्य संबंध होता है और दोनों एक साथ धड़कते हैं। ढोला रास्ते में पूंगल पहुंचने को व्यग्र है और उधर मारवणी की नींद हराम हो रही है। ढोला की व्याकुलता उसका स्वप्न बनकर उसे सोने नहीं दे रही है मारवणी स्वप्न में ही ढोला से मिल जाती है।

प्रतीकात्मक स्वप्न भी भविष्य सूचक स्वप्न का ही एक रूप है। मारवणी का स्वप्न केवल मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हेतु ही प्रयुक्त हुआ है। पथ की बाधाओं का नाम मात्र ही वर्णन है, कवि को लगता है कि वर्षों से बिछड़े प्रेमी–प्रेमिका को मिला देने की शीघ्रता है तभी वो अपने युग की रूढ़ि से अलग हटकर पथ की बाधाओं का अधिक वर्णन न कर मिलन करवा दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कार्य की सिद्धि के समीप शीघ्रता से पहुंचा देने वाली इस घटना बिंदु का अपना महत्व है। ढोला पूंगल पहुंच जाता है और सभी आनंदित होते हैं।

ढोला–मारु का मिलन

लेखक ने दोनों का प्रेम मिलन करवाया है, दोनों एक दूसरे के अनुरूप ही है उनका मिलन कोई शारीरिक मिलन नहीं है यह तो दो आत्माओं का मिलन है, दो ह्रदयों की एकता है । इसलिए लेखक कहता है कि वे दोनों नीर क्षीर की तरह एकम् एक हो गए।

इतने वर्षों से बिछुड़े, मिले तो कवि को उसमें स्वाभाविकता लाने की आवश्यकता महसूस हुई तो उसने पहेलियां बुझाने के महत्वपूर्ण अभिप्राय का प्रयोग किया। यह मिलन क्षण अपने में पूर्ण हो उठा। पहेलियों द्वारा प्रेम के भाग्य को परखने का सफल प्रयत्न होता है, विशेषतः पहेलियों के शुद्ध उत्तर के परिणामस्वरूप प्रेमी दम्पति का मुखर मिलन अपने पूर्ण विकास को पाकर स्थायित्व को प्राप्त होता है। पहेलियां बुझाने की प्रथा में संहिताओं के तत्व ज्ञान संबंधी विश्वास का पता चलता है, बहुत से आख्यानों में प्रेमी–प्रेमिका एक दूसरे को पहेली बुझाते दिखाए गए हैं। यहां यह कह देना आवश्यक होगा कि इस प्रथा में भी जहां एक और लोकगीतों की परंपरा का अनुसरण मिलता है वहीं भारतीय धर्म शास्त्रों का सैद्धांतिक पक्ष भी परिलक्षित होता है। यजुर्वेद और यज्ञसेनी संहिता में पुरोहितों के द्वारा पहेली बुझाने की प्रथा का वर्णन मिलता है जो अपने इष्ट– देव को प्रसन्न करने के लिए किया करते थे।''[5]

संयोग श्रृंगार की प्रेम पद्धति में वाक्य–चातुर्य, वचन–विलास और परिहास का मनोहर आयोजन रहता है। ढोला के प्रेम में ऐसा आयोजन भी कवि को अभीष्ट था। जायसी ने भी इसका प्रयोग किया है। प्राचीन भारतीय कहानियों और विशेषतः प्रेम–कहानियों में वाक्य–चातुर्य और विनोद– वृति का बहुत सा साहित्य भरा पड़ा है। प्राकृत और अपभ्रंश काव्य के गाथा और दोहा–साहित्य में इस प्रकार का विनोद–पूर्ण साहित्य के कुछ अंश अब भी सुरक्षित मिलते है। ढोला का यह विनोद पूर्ण साहित्यांश अपभ्रंश साहित्य पर भी बहुत कुछ आश्रित लगता है। कहना न होगा कि पाश्चात्य गीत–काव्यों में भी पहेलियां और अनेक ढंग की वचन–चातुरी का विशद साहित्य उपलब्ध होता है। कभी–कभी इस पहेली में प्रेम का लाभ होता है। प्रेम के साधारणत वाग्विलास और परिहास की वृति का स्फुट होना स्वाभाविक ही होता है । प्राचीन प्रेम कहानियों में पहेलियों के विश्वव्यापी प्रचार और महत्व के विषय में गीत काव्यों के सर्वश्रेष्ठ आचार्य प्रो0 चाइल्ड ने भी अपने विचार प्रकट किए हैं।''[6]

नरवर लौटते समय मार्ग में बाधाऐं

मारवणी को लेकर लौटना भी महत्वपूर्ण है कवि को उसे लौटा ले जाने के लिए किसी संदेशवाहक दूत की आवश्यकता नहीं पड़ी है। ढोला अपने कर्तव्य को मालवणी के प्रति भी जानता है उसके अधिकार में हिस्सा बटाने वाली लाने तो वह चला आया था परंतु उसका पूर्ण अधिकार छीनना उससे अभीष्ट नहीं। लेखक की यहां सामाजिक दृष्टि विशेष रुप से सजग है जो उसके काव्य को अन्य प्रेमाख्यानक काव्यों से अलग स्थान प्रदान करती है क्योंकि ढोला केवल मारवणी के विरह दुख को दूर कर उसे लेने आया है पूंगल में रहने नहीं । उसका प्रेम यहां सात्विक और साहित्यिक है । वह अपनी दोनों विवाहित पत्नियों को समान अधिकार देना चाहता है।

मारवणी का गौना लेकर लौटते समय पथ में अनेक बाधाएं उपस्थित होती हैं, इन बाधाओं को दिखाने का विशेष महत्व है। रूढि का प्रयोग मुख्यतः नायक के साहस, प्रेम, शौर्य और अद्भुत कार्यों के प्रदर्शन द्वारा कथा में चमत्कार लाकर उसे अधिकाधिक मनोरंजन बनाना होता है। इस तरह के कथानक मोड़ों में पाठकों की जिज्ञासा वृत्ति उसी प्रकार रमती है जैसे आधुनिक युग के जासूसी और तिलस्मी उपन्यासों में। इस कथानक रूढि का

रोमांचकता से अनिवार्य रूप से संबंध है। इसी कारण यूरोप में मध्य काल में इस प्रकार के जो कथा–काव्य लिखे गऐ, उन्हें 'रोमांस' कहा जाता है। रोमांचकता के लिए सबसे अधिक अवसर भयंकर यात्रा, युद्ध, आखेट आदि के कार्यों में मिलता है। इसलिए रोमांचकता लाने के लिए कथाकार किसी न किसी प्रकार की यात्रा आते या जाते समय अवश्य करवाना चाहता था । जाते समय उसे मिलन की उत्कंठा थी परंतु लौटते समय उसने स्थिति की सहजता से लाभ उठाया है।

प्रेम तो एक शाश्वत सत्य है किंतु उसकी अभिव्यक्ति और सहायक साधनों का स्वरूप विभिन्न युगों में बदलता रहता है । उस समय भारत में कोई एक केंद्रीय सत्ता नहीं रह गई थी, देश अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभाजित हो गया था जिनके शासक वैयक्तिक के सुख–स्वार्थ के लिए परस्पर युद्ध और एक दूसरे की कन्याओं का हरण करते, राज्य विजय और लूटमार किया करते थे । बड़े बड़े राजा–महाराजाओं की तो बात ही दूर रही, छोटे–छोटे सरदारों की भी यही हालत थी ऊमर सूमरे का राह में बाधा पहुंचाना इसी भावना का प्रतीक है। दुष्ट ऊमर सूमरे के षड्यंत्र में आकर ढोला का जीवन संकट में पड़ जाता है तो उसी समय 'पोहर सेदि डूमणी' गायिका की चेतावनी दिलवा कर वह उनकी जान बचाता है और पथ की बाधा दूर होने पर कथानक आगे बढ़ता है।

पथ की बाधा यही नहीं खत्म हो जाती, वह और भीषण हो उठती हैं। एक रात राह में प्रियतम के कंठ से लग कर सोती हुई मारवणी को एक विषधर काट खाता है। ढोला इतना व्यग्र हो उठता है कि वह मारवणी के साथ मरने को तैयार हो जाता है किंतु ऐसे समय एक योगी आकर मारवणी को जीवन दान देता है । यहां कवि यह स्पष्ट कर देना चाहता है की ऊमर सूमरे के दुष्ट चंगुल से तो वह प्रेमी युगल निकल आया है। परंतु इस बाधा द्वारा ढोला के प्रेमी हृदय को कसौटी पर जांच कर खरा उतार दिया है।

यहां यह भी स्पष्ट है कि आदिम युग से लेकर मध्यकाल तक ऋषि, मुनि, योगी, सिद्ध, तांत्रिक, जादूगर, डाइन, वरदान प्राप्त मनुष्य आदि असामान्य व्यक्ति ऐसे कार्यों के कर्ता होते थे जिन्हें समाज अत्याधिक आदर या भय की दृष्टि से देखता था । तपस्या, साधना, देव, यज्ञ या प्रेम की साधना, योग साधना, तंत्र साधना तथा जादू–टोना आदि गुप्त विद्याओं की प्राप्ति द्वारा मानव को इस प्रकार की अलौकिक शक्ति प्राप्त होती है। मध्य काल के लोगों में यह विश्वास था। सारे संसार में इन साधनाओ और विद्याओं की बहुत प्राचीन परंपरा है भारतवर्ष में तो वैदिक काल से ही इनके अस्तित्व का पता चलता है। तपस्वियों और रहस्यवादी साधकों की सिद्धियों और चमत्कारों के संबंध में यूरोपीय देशों में भी बहुत प्राचीन समय से, विशेषकर ईसाई धर्म के प्रारंभ के बाद से, तरह–तरह की अनुश्रुतिया प्रचलित रही है। अनेक इसाई संतों के संबंध में प्रार्थना करते समय पृथ्वी के ऊपर उठ जाने की कथाएं प्रचलित है।''[7]

यहां हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जैसा हम पूर्व में भी स्पष्ट कर आए हैं की ढोला का कार्य उद्देश्य महत्वपूर्ण है । अपनी विवाहिता के सब कष्टों को दूर कर, ले आना इससे बढ़कर पवित्र और महत्वपूर्ण कार्य और क्या होगा ? कार्य के अनुरूप प्रेम प्रयास भी उतना ही महत्वपूर्ण है इस कारण लेखक उन्हें पथ की बाधाओं से उभार कर नरवर ले आता है। इस घटना का यही महत्व है जोकि लेखक की उपलब्धि है और उद्देश्य में नवीनता लिए है।

नारी का मनोविज्ञान

अंतिम कथानक बिंदु पर कवि ने लोक स्वभाव–पारखी के रूप में अपने को प्रस्तुत किया है जो सराहनीय होने के साथ–साथ महत्वपूर्ण है। सामाजिक दृष्टि से बहु विवाह प्रथा कलह–मुलक होने के कारण जितनी अनिष्टकारी रही है उतनी ही काव्य में प्रेम–मार्ग की व्यावहारिक जटिलताओं के परिणामस्वरूप सपत्नी–डाह और प्रेम–संघर्ष की सूक्ष्म भावनाओं को सामने लाने के कारण वह कवियों की लेखनी का ग्राह और अनुरंजनकारी विषय रही है। लोक साहित्यकार लोक–स्वभाव का पारखी होता है। इसलिए कि वह स्वयं एक साधारण जीवन जीने वाला व्यक्ति होता है और इस तरह लोक–जीवन को वह दिन–रात निकट से देखता रहता है। अतः उसका मनोविज्ञान अधिक नहीं बल्कि दृष्ट होता है। 'ढोला मारू रा दूहा' में नारी मनोविज्ञान का ऐसा ही यथार्थ चित्र अंतिम बिंदु पर हुआ है । ढोला जब मारवणी को लेकर नरवर लौट आता है तो मालवणी और मारवणी क्रमशः मारू और मालव देश की निंदा करती है। हर नारी अपने मायके को श्रेष्ठ समझती है और ऐसा दिखाने के प्रयास में वह दूसरे के मायके के अवगुणों और अपने मायके के गुणों का बखान करती है। यह बात सपत्नियों में कितने उग्र रूप में होगी यह सहज ही अनुभेय है। ईर्ष्याजनित विवाह को जो प्रेम–पूर्ण मीठी कलह से अधिक कुछ नहीं था, चतुर और व्यवहार दक्ष प्रेमी ढोला दोनों को प्रेम पूर्वक समझा कर शांत कर देता है। प्रेम–मार्ग का इससे मिलता–जुलता व्यावहारिक अभिनय पदमावत में भी आया है । यह घटना काव्य को लोक समन्वित और व्यवहार संबद्ध वास्तविकता का सौंदर्य देने में बहुत सफल हुई है।

अंत में हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि लेखक के कथानक की सफलता असंदिग्ध है। घटनाएं अधिक नहीं है, परंतु जो भी है उन्हीं को कवि ने पूर्ण रमणीयता के साथ तल्लीन होकर अंकित किया है। यही कारण है कि मिलन और विरह के भावपूर्ण स्थल भी घटनाओं के समान ही गतिशील एवं रोचक हो गए हैं। अत्यंत मर्यादित रूप में प्रधान घटना को विकसित करके समाहार पर पहुंचाया गया है। समस्त कथानक में वस्तुगत प्रवाह का अटूट क्रम दृष्टिगोचर होता है। कथानक अथ से इति तक बड़ी द्रुतगति से दौड़ता है, कथा की गति में विघ्न डालने वाला अंश कथाभर में नहीं है। समस्त कथानक बिंदु कथानक की जीवन शक्ति को साथ लिए एक दूसरे को जन्म देते विशाल सागर की तरह लहराने लगते हैं यही 'ढोला मारू रा दूहा' के कथानक की पूर्णता है।''[8]

'ढोला मारू का दूहा' का मूल्यांकन

राजस्थानी प्रेमाख्यानों में 'ढोला मारू का दूहा' का विशेष महत्व है। इस रचना पर जायसी के ''पदमावत'' का आंशिक प्रभाव माना जाता है। सम्पा दक–त्रय ने इसकी प्रेमकथा की तुलना पदमावती की प्रेम कहानी से की है और बताया है कि 'ढोला मारू का दूहा' विशुद्ध प्रेमाख्यीन है। परवर्ती प्रेमाख्यानों पर 'ढोला मारू का दूहा' का पूर्ण प्रभाव दिखाई देता है। इसकी कथा केवल राजस्थान तक ही सिमित नहीं है, अपितु इसमें उत्तर एवं मध्य भारत के लोक–मानस को भी प्रभावित किया है। लोक–नाटको मे तो ढोला मारू का प्रेमाख्यान काफी लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध रहा है। सिन्धी, पंजाबी, हरियाणवी, ब्रज, गुजराती, मालवी आदि भाषाओं में भी यह प्रेमाख्यान पाया जाता है।

प्रेमाख्यानों मे संदेश–प्रेषण के अलग–अलग माध्यम रहे है। 'पदमावत' में हीरामन तोता संदेश लेकर आता है और फिर रत्नसेन पद्मावती की तलाश में सिंहलदीप जाता है। ढोला–मारू में ढ़ाढियों के माध्यम से ढोला तक संदेश भेजा जाता है। तब वह नरवर से पूंगल मे मारवणी से मिलने आता है। प्रेमाख्यान में खलनायक की स्थिति भी रहती है। 'पदमावत' में राघवचेतन खलनायक है तो ढोला मारू में ऊमर सूमरा उसी तरह का पात्र है। प्रेमाख्यादनों मे अनेक बाधाऐं है। नायक और नायिका के प्रेम की परीक्षा लेती है। 'पदमावत' की प्रेम कथा दुःखान्त है, जबकि ढोला मारू की प्रेम–कहानी सुखान्त है। ऊमर सूमरा का षडयन्त्रु विफल हो जाता है तथा ढोला मारवणी को लेकर नरवर लौट आता है। तब मालवणी व मारवणी के साथ वह अपना दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करने लगता है।

निष्कर्ष

भारतीय प्रेमाख्यान काव्यों की परम्परा का मूल तत्व प्रेम है और देश–काल परिस्थिति के अनुसार प्रेम के आदर्श बदलते रहते है। अतः इन प्रेम–कथाओं में भी प्रेम–भावना और प्रेमादर्श मे विभिन्नता दिखाई देती है। ढोला मारू का प्रेम–वर्णन अपनी विशिष्टता रखता है। इसमें निरूपित प्रेम कर्तव्य–प्रेरित है, रूप लोभ के कारण नहीं । इसमें प्रेम–वर्णन मर्यादित और शील की सीमा में हुआ है, वह प्रेम स्वाभाविक तथा दाम्पत्य–जीवन की अभिलाषा से परिपुष्ट होने से गम्भीर भी है। निश्चल प्रेमादर्शो का पालना इसकी अन्यतम विशेषता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारतीय प्रेमाख्यान काव्य पृ0 285*
2. *स्वप्न दर्शन–राजाराम शास्त्री भूमिका पृ0 'क'*
3. *Ruth Benedict : Religion and General Anthropology p. 642*
4. *Lewis Spence : The outlines of mythology p. 22*
5. *Winternitz : A History of Indian Literature Vol. 1 , P 183-184*
6. *Riddles play an important part in polular stay and that from remote times. No one needs to be reminded of samon, Oedipus Appalonius of tyre. Riddle tales, Which if not so old as the oldest of these, may be carried in all likelihood some centuries beyond our era. Still live in asiatie and European tradition and have lheir representatives inpolular ballads (F.J. Child: English& Scottish Ballads)*
7. *ए. वी. टायलर : प्रिमिटिव कल्चर, वाल्युम –1 पृष्ठ 150–51।*
8. *डॉ. इन्दू बालीः मध्यमकालीन हिन्दी प्रेमाख्यानों के कथानायक का अध्ययन।*